



Souravjoshi

08 Sep 2000

09:09 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121020301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 08/09/2000
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 09:09:00 घंटे
इष्ट _____: 07:45:42 घटी
स्थान _____: Delhi
देश _____: India

अक्षांश _____: 28:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 08:47:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:22 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:57:56 घंटे
सूर्योदय _____: 06:02:43 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:34:14 घंटे
दिनमान _____: 12:31:31 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 21:55:59 सिंह
लग्न के अंश _____: 01:58:47 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पूर्वाषाढा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: सौभाग्य
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: धा-धर्मेन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1922	भाद्रपद	17
पंजाबी	संवत : 2057	भाद्रपद	24
बंगाली	सन् : 1407	भाद्रपद	23
तमिल	संवत : 2057	आवनी	24
केरल	कोल्लम : 1176	चिंगम	23
नेपाली	संवत : 2057	भाद्रपद	24
चैत्रादि	संवत : 2057	भाद्रपद	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2057	भाद्रपद	शुक्ल 10

पंचांग

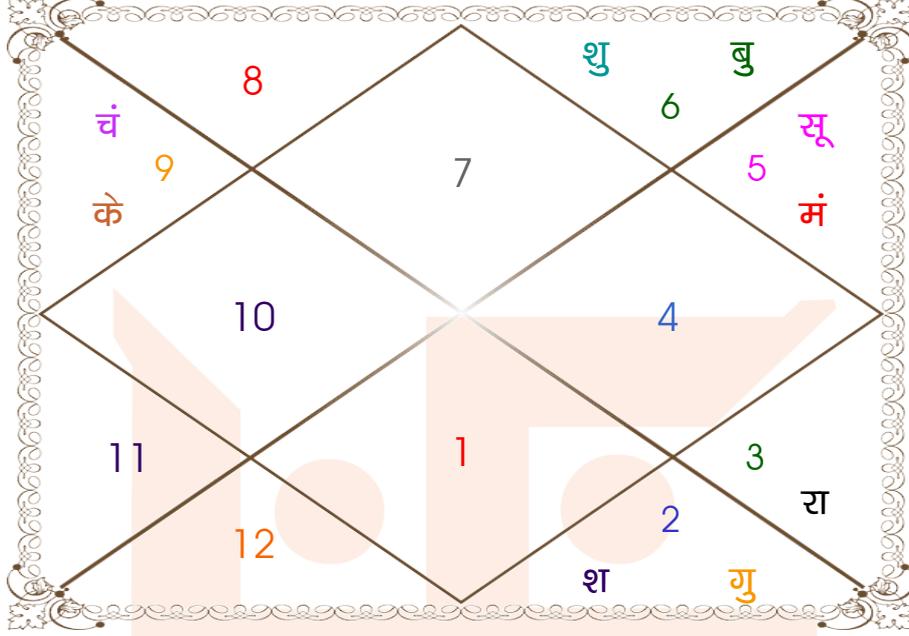
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 15:56:39
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 25:01:01 घंटे
जन्म योग _____ : पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग _____ : आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____ : 07:38:23 घंटे
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 15:56:39 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 28:09:37
भभोग _____ : 67:49:40
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 11 वर्ष 8 मा 10 दि

घात चक्र

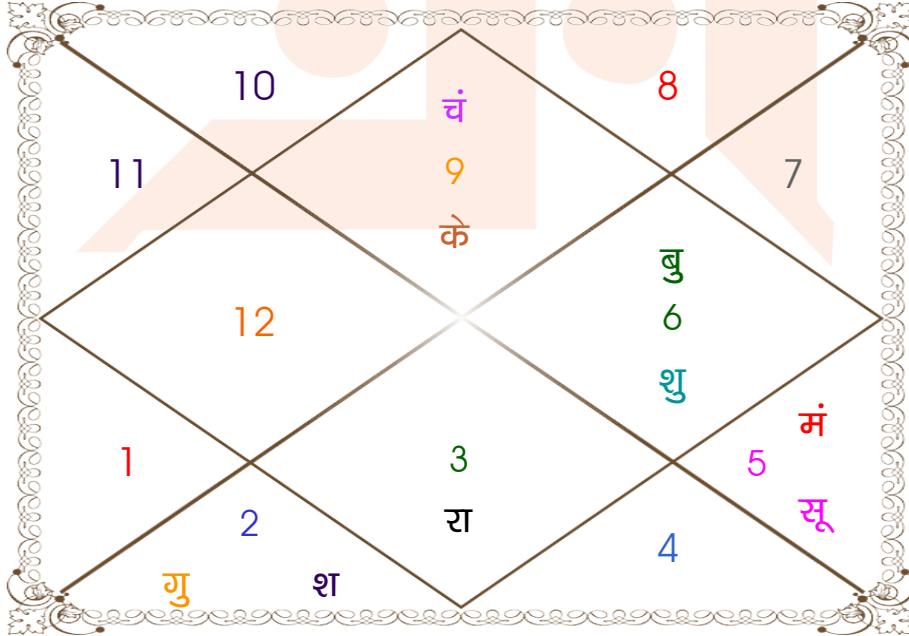
मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : गरुड़
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

		श गु	रा
			मं सू
के चं		ल	शु बु

लग्न कुंडली

श गु		
रा		
सू मं	ल	चं के
बु शु		

विंशोत्तरी
शुक्र 11वर्ष 8मा 10दि
शुक्र

08/09/2000

20/05/2112

शुक्र	19/05/2012
सूर्य	20/05/2018
चन्द्र	19/05/2028
मंगल	20/05/2035
राहु	20/05/2053
गुरु	20/05/2069
शनि	19/05/2088
बुध	21/05/2105
केतु	20/05/2112

योगिनी
सिद्धा 4वर्ष 1मा 3दि
भद्रिका

12/10/2022

13/10/2027

भद्रिका	23/06/2023
उल्का	22/04/2024
सिद्धा	13/04/2025
संकटा	23/05/2026
मंगला	13/07/2026
पिंगला	23/10/2026
धान्या	24/03/2027
भ्रामरी	13/10/2027

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

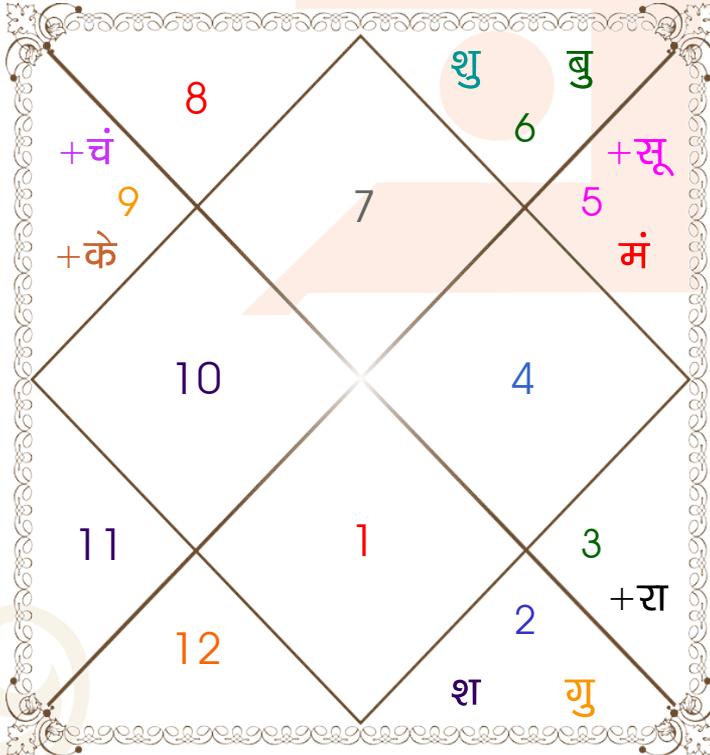
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न	तुला	01:58:47	313:24:32	चित्रा	3 14	शुक्र	मंगल	केतु	---
सूर्य	सिंह	21:55:59	00:58:15	पूर्वाफाल्गुनी	3 11	सूर्य	शुक्र	शनि	स्वराशि
चंद्र	धनु	18:52:12	11:47:28	पूर्वाषाढ़ा	2 20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल	सिंह	00:32:04	00:38:01	मघा	1 10	सूर्य	केतु	केतु	मित्र राशि
बुध	कन्या	06:29:59	01:38:42	उ०फाल्गुनी	3 12	बुध	सूर्य	बुध	उच्च राशि
गुरु	वृष	16:37:17	00:04:07	रोहिणी	2 4	शुक्र	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	कन्या	15:57:15	01:13:33	हस्त	2 13	बुध	चंद्र	शनि	नीच राशि
शनि	वृष	07:05:58	00:00:28	कृतिका	4 3	शुक्र	सूर्य	केतु	मित्र राशि
राहु	मिथु	29:33:36	00:00:59	पुनर्वसु	3 7	बुध	गुरु	चंद्र	उच्च राशि
केतु	धनु	29:33:36	00:00:59	उत्तराषाढ़ा	1 21	गुरु	सूर्य	राहु	उच्च राशि
हर्ष	व मक	23:55:42	00:02:01	धनिष्ठा	1 23	शनि	मंगल	मंगल	---
नेप	व मक	10:17:38	00:01:07	श्रवण	1 22	शनि	चंद्र	चंद्र	---
प्लूटो	वृश्चि	16:22:54	00:00:36	अनुराधा	4 17	मंगल	शनि	गुरु	---
दशम भाव	कर्क	03:32:58	--	पुष्य	-- 8	चंद्र	शनि	शनि	--

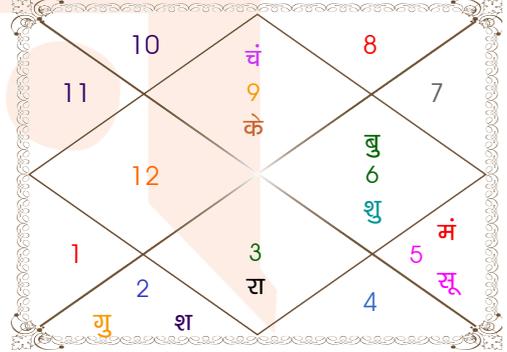
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:51:44

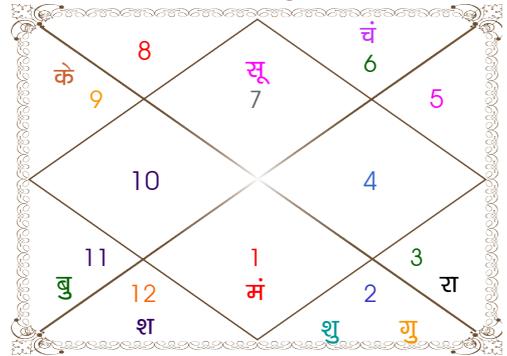
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 17:14:29	तुला 01:58:47
2	तुला 17:14:29	वृश्चिक 02:30:11
3	वृश्चिक 17:45:53	धनु 03:01:35
4	धनु 18:17:17	मकर 03:32:58
5	मकर 18:17:17	कुम्भ 03:01:35
6	कुम्भ 17:45:53	मीन 02:30:11
7	मीन 17:14:29	मेष 01:58:47
8	मेष 17:14:29	वृष 02:30:11
9	वृष 17:45:53	मिथुन 03:01:35
10	मिथुन 18:17:17	कर्क 03:32:58
11	कर्क 18:17:17	सिंह 03:01:35
12	सिंह 17:45:53	कन्या 02:30:11

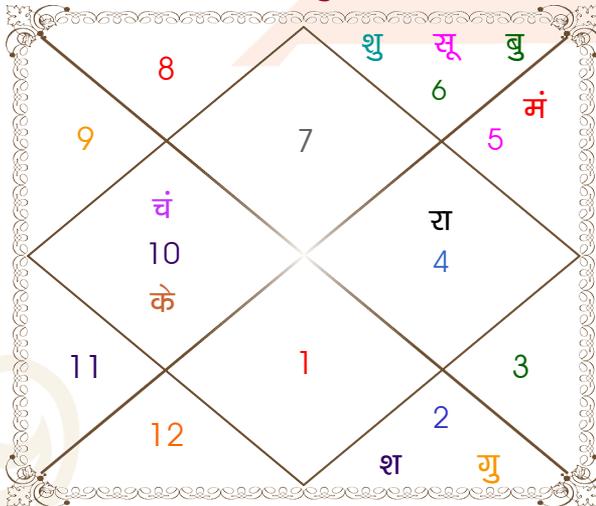
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	01:58:47
2	वृश्चिक	00:46:33
3	धनु	01:28:58
4	मकर	03:32:58
5	कुम्भ	05:39:33
6	मीन	05:38:44
7	मेष	01:58:47
8	वृष	00:46:33
9	मिथुन	01:28:58
10	कर्क	03:32:58
11	सिंह	05:39:33
12	कन्या	05:38:44

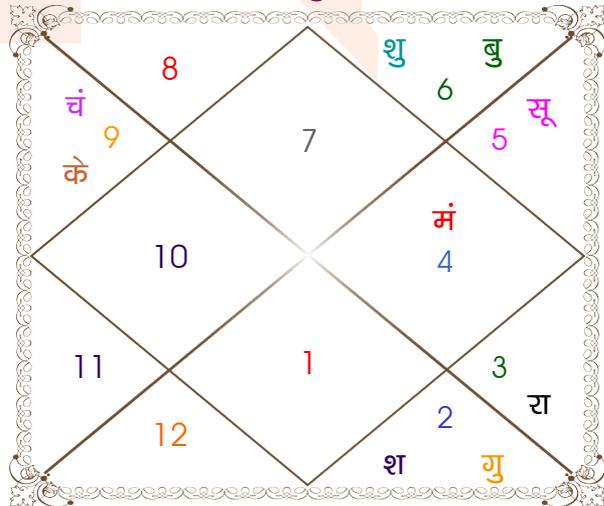
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 11 वर्ष 8 मास 10 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
08/09/2000	19/05/2012	20/05/2018	19/05/2028	20/05/2035
19/05/2012	20/05/2018	19/05/2028	20/05/2035	20/05/2053
00/00/0000	सूर्य 06/09/2012	चंद्र 20/03/2019	मंगल 16/10/2028	राहु 30/01/2038
00/00/0000	चंद्र 08/03/2013	मंगल 19/10/2019	राहु 03/11/2029	गुरु 25/06/2040
00/00/0000	मंगल 13/07/2013	राहु 19/04/2021	गुरु 10/10/2030	शनि 02/05/2043
08/09/2000	राहु 07/06/2014	गुरु 19/08/2022	शनि 19/11/2031	बुध 18/11/2045
राहु 20/07/2002	गुरु 26/03/2015	शनि 20/03/2024	बुध 15/11/2032	केतु 07/12/2046
गुरु 20/03/2005	शनि 07/03/2016	बुध 19/08/2025	केतु 13/04/2033	शुक्र 07/12/2049
शनि 19/05/2008	बुध 12/01/2017	केतु 20/03/2026	शुक्र 13/06/2034	सूर्य 31/10/2050
बुध 20/03/2011	केतु 20/05/2017	शुक्र 19/11/2027	सूर्य 19/10/2034	चंद्र 01/05/2052
केतु 19/05/2012	शुक्र 20/05/2018	सूर्य 19/05/2028	चंद्र 20/05/2035	मंगल 20/05/2053

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
20/05/2053	20/05/2069	19/05/2088	21/05/2105	20/05/2112
20/05/2069	19/05/2088	21/05/2105	20/05/2112	00/00/0000
गुरु 08/07/2055	शनि 23/05/2072	बुध 16/10/2090	केतु 17/10/2105	शुक्र 20/09/2115
शनि 18/01/2058	बुध 31/01/2075	केतु 13/10/2091	शुक्र 17/12/2106	सूर्य 19/09/2116
बुध 25/04/2060	केतु 10/03/2076	शुक्र 13/08/2094	सूर्य 24/04/2107	चंद्र 21/05/2118
केतु 01/04/2061	शुक्र 11/05/2079	सूर्य 20/06/2095	चंद्र 23/11/2107	मंगल 21/07/2119
शुक्र 01/12/2063	सूर्य 22/04/2080	चंद्र 18/11/2096	मंगल 20/04/2108	राहु 09/09/2120
सूर्य 18/09/2064	चंद्र 21/11/2081	मंगल 15/11/2097	राहु 09/05/2109	00/00/0000
चंद्र 18/01/2066	मंगल 31/12/2082	राहु 05/06/2100	गुरु 14/04/2110	00/00/0000
मंगल 25/12/2066	राहु 06/11/2085	गुरु 11/09/2102	शनि 24/05/2111	00/00/0000
राहु 20/05/2069	गुरु 19/05/2088	शनि 21/05/2105	बुध 20/05/2112	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 11 वर्ष 8 मा 11 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु 19/08/2025 20/03/2026	चंद्र - शुक्र 20/03/2026 19/11/2027	चंद्र - सूर्य 19/11/2027 19/05/2028	मंगल - मंगल 19/05/2028 16/10/2028	मंगल - राहु 16/10/2028 03/11/2029
केतु 31/08/2025 शुक्र 06/10/2025 सूर्य 17/10/2025 चंद्र 03/11/2025 मंगल 16/11/2025 राहु 18/12/2025 गुरु 15/01/2026 शनि 18/02/2026 बुध 20/03/2026	शुक्र 30/06/2026 सूर्य 30/07/2026 चंद्र 19/09/2026 मंगल 24/10/2026 राहु 24/01/2027 गुरु 15/04/2027 शनि 20/07/2027 बुध 14/10/2027 केतु 19/11/2027	सूर्य 28/11/2027 चंद्र 13/12/2027 मंगल 24/12/2027 राहु 20/01/2028 गुरु 14/02/2028 शनि 13/03/2028 बुध 08/04/2028 केतु 19/04/2028 शुक्र 19/05/2028	मंगल 28/05/2028 राहु 20/06/2028 गुरु 09/07/2028 शनि 02/08/2028 बुध 23/08/2028 केतु 01/09/2028 शुक्र 26/09/2028 सूर्य 03/10/2028 चंद्र 16/10/2028	राहु 12/12/2028 गुरु 01/02/2029 शनि 03/04/2029 बुध 27/05/2029 केतु 19/06/2029 शुक्र 22/08/2029 सूर्य 10/09/2029 चंद्र 12/10/2029 मंगल 03/11/2029
मंगल - गुरु 03/11/2029 10/10/2030	मंगल - शनि 10/10/2030 19/11/2031	मंगल - बुध 19/11/2031 15/11/2032	मंगल - केतु 15/11/2032 13/04/2033	मंगल - शुक्र 13/04/2033 13/06/2034
गुरु 19/12/2029 शनि 11/02/2030 बुध 31/03/2030 केतु 20/04/2030 शुक्र 16/06/2030 सूर्य 03/07/2030 चंद्र 31/07/2030 मंगल 20/08/2030 राहु 10/10/2030	शनि 13/12/2030 बुध 08/02/2031 केतु 04/03/2031 शुक्र 11/05/2031 सूर्य 31/05/2031 चंद्र 04/07/2031 मंगल 27/07/2031 राहु 26/09/2031 गुरु 19/11/2031	बुध 09/01/2032 केतु 30/01/2032 शुक्र 31/03/2032 सूर्य 18/04/2032 चंद्र 18/05/2032 मंगल 08/06/2032 राहु 01/08/2032 गुरु 19/09/2032 शनि 15/11/2032	केतु 24/11/2032 शुक्र 19/12/2032 सूर्य 26/12/2032 चंद्र 07/01/2033 मंगल 16/01/2033 राहु 08/02/2033 गुरु 27/02/2033 शनि 23/03/2033 बुध 13/04/2033	शुक्र 23/06/2033 सूर्य 15/07/2033 चंद्र 19/08/2033 मंगल 13/09/2033 राहु 16/11/2033 गुरु 12/01/2034 शनि 20/03/2034 बुध 19/05/2034 केतु 13/06/2034
मंगल - सूर्य 13/06/2034 19/10/2034	मंगल - चंद्र 19/10/2034 20/05/2035	राहु - राहु 20/05/2035 30/01/2038	राहु - गुरु 30/01/2038 25/06/2040	राहु - शनि 25/06/2040 02/05/2043
सूर्य 20/06/2034 चंद्र 30/06/2034 मंगल 08/07/2034 राहु 27/07/2034 गुरु 13/08/2034 शनि 02/09/2034 बुध 20/09/2034 केतु 28/09/2034 शुक्र 19/10/2034	चंद्र 06/11/2034 मंगल 18/11/2034 राहु 20/12/2034 गुरु 18/01/2035 शनि 20/02/2035 बुध 23/03/2035 केतु 04/04/2035 शुक्र 10/05/2035 सूर्य 20/05/2035	राहु 15/10/2035 गुरु 24/02/2036 शनि 29/07/2036 बुध 15/12/2036 केतु 11/02/2037 शुक्र 25/07/2037 सूर्य 13/09/2037 चंद्र 04/12/2037 मंगल 30/01/2038	गुरु 27/05/2038 शनि 13/10/2038 बुध 14/02/2039 केतु 06/04/2039 शुक्र 30/08/2039 सूर्य 13/10/2039 चंद्र 25/12/2039 मंगल 14/02/2040 राहु 25/06/2040	शनि 07/12/2040 बुध 03/05/2041 केतु 03/07/2041 शुक्र 23/12/2041 सूर्य 14/02/2042 चंद्र 11/05/2042 मंगल 11/07/2042 राहु 14/12/2042 गुरु 02/05/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

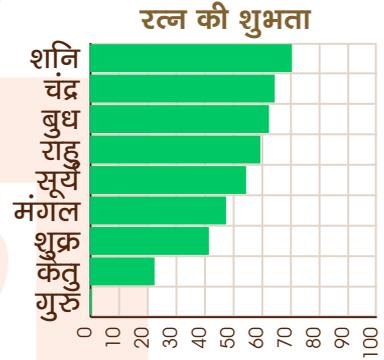
मूलांक	8
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 2, 8
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	70%	दुर्घटना से बचाव, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	64%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	62%	कम खर्च, भाग्योदय
गोमेद	राहु	59%	भाग्योदय, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	54%	धनार्जन
मूंगा	मंगल	47%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
हीरा	शुक्र	41%	व्यय, दुर्घटना, रोग
लहसुनिया	केतु	22%	पराक्रम हानि, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	19/05/2012	34%	52%	47%	69%	0%	58%	77%	66%	34%
सूर्य	20/05/2018	67%	70%	55%	62%	0%	16%	58%	44%	0%
चंद्र	19/05/2028	61%	77%	47%	69%	0%	41%	70%	44%	0%
मंगल	20/05/2035	61%	70%	61%	50%	0%	41%	70%	44%	34%
राहु	20/05/2053	34%	52%	22%	62%	0%	52%	77%	72%	0%
गुरु	20/05/2069	61%	70%	55%	50%	9%	16%	70%	59%	22%
शनि	19/05/2088	34%	52%	22%	69%	0%	52%	83%	66%	0%
बुध	21/05/2105	61%	52%	47%	75%	0%	52%	70%	59%	22%
केतु	20/05/2112	34%	52%	55%	62%	0%	52%	58%	44%	47%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

व्यावसायिक परेशानी
धन
पराक्रम
सुख
शत्रु व रोग

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित्त या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र
(20/05/2018 - 19/05/2028)**

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 20/05/2018 को आरम्भ होगी और 19/05/2028 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्द्रपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

जीवन में नये विषयों के अध्ययन के लिए यह अवधि उत्तम सिद्ध होगी अध्ययन जारी रखने में आपकी रुचि होगी और आप अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल होंगे ।



Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

**अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(19/08/2025 - 20/03/2026)**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 20/05/2018 को प्रारंभ हुई ओर 19/05/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 19/08/2025 को प्रारंभ होकर 20/03/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप बली और साहसी होंगे। शत्रुओं का दमन होगा। आपकी कला और संगीत में रुचि होगी। मस्तिष्क कभी-कभी विचलित हो सकता है। समय लगभग मध्यम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार और मंगलवार को व्रत करें। व्रत के बाद हनुमानजी की उपासना करें और मीठा भोजन लें, नमक न लें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(20/03/2026 - 19/11/2027)**

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 20/05/2018 को प्रारंभ होकर 19/05/2028को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 20/03/2026 को प्रारंभ होकर 19/11/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधाओं के पीछे भागेंगे, मगर सफलता नहीं मिलेगी। निम्न स्तर के विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध हो सकते हैं।

धन कमाने के लिए अवैध तरीके अपना सकते हैं। कंजूसी भी बढ़ेगी। इन सबके कारण जीवनसाथी से संबंध-विच्छेद हो सकता है। सावधानी की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।

**महादशा :- मंगल
(19/05/2028 - 20/05/2035)**

मंगल की महादशा 19/05/2028 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 20/05/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होंगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई-बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

Meenna Salaria Astro & Numerio

Delhi

9667113751

salaria.meena@gmail.com

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।



**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(19/05/2028 - 16/10/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/05/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 19/05/2028 को प्रारंभ होकर 16/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्च भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी-मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई-बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ-पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(16/10/2028 - 03/11/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/05/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 16/10/2028 को प्रारंभ होकर 03/11/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी संकल्पशक्ति उत्तम रहेगी। भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। कोड़ लंबी यात्रा या विदेश यात्रा हो सकती है। आप स्वतंत्रचिंत और अपरंपरावादी हैं। सामाजिक रीतियों का पालन करना श्रेयस्कर होगा। संचार साधनों में सफलता मिल सकती है। छोटे भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साहस का परिचय देंगे।

आपके जीवनसाथी की सक्रियता बढ़ेगी। उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता

के धन में वृद्धि होगी। आपकी माता शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहन अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, उनका विवाह हो सकता है। उनकी आय बढ़ेगी, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, उत्तम मित्र बनेंगे।

आपकी संतान तकनीकी विषयों का अध्ययन कर सकती है। अगर से कार्यारत हैं तो निवेश से धनार्जन कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे; धन का संचय होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। हाथ-पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(03/11/2029 - 10/10/2030)**

आपकी मंगल की महादशा 19/05/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/11/2029 को प्रारंभ होकर 10/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप कुछ धन बिना परिश्रम के भी प्राप्त कर सकते हैं। अचानक धन आ सकता है। आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। अध्यात्म या पराविद्या में रुचि हो सकती है। उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे, परिवार में वातावरण मधुर रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता से लाभ होगा। समाजसेवा में भाग लेंगे। शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा।

आपके जीवनसाथी खूब धन प्राप्त करेंगे। आपके पिता धर्म और अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वे शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के कार्यालय उत्तम होंगे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी; शिक्षा के लिए उत्तम समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, मगर उदर रोगों से बचाव आवश्यक है। मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(10/10/2030 - 19/11/2031)**

आपके लिए मंगल की महादशा 19/05/2028 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/10/2030 को प्रारंभ होकर 19/11/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप विवाह द्वारा धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। व्यापार या विरासत से भी धन आ सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। परिवार की जिम्मेदारियों को ठीक प्रकार से निभाएंगे। घर में शांति रहेगी। खानपान में देखभाल ओर नियंत्रण रखें। खुद की कमाई आमदनी भी पर्याप्त होगी। संतान से सुख मिलेगा। प्रसिद्धि और उच्चपद का योग है। प्रोन्नति के साथ तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय में वृद्धि होगी। आपके पिता अध्यात्म में रुचि रखेंगे। माता को पहले किये गये निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन सब बाधाओं को पार कर लेंगे, उनकी प्रोन्नति हो सकती है।

आपकी संतान को नींव मजबूत करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति से आय हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधी परास्त होंगे, सफलता मिलेगी। व्यापारियों और परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। नेत्ररोग और पित्त के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, काले तिल, काले वस्त्र और सरसों का तेल दान में दें।